राजस्थान पत्रिका

6/1/2017

केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान अविकानगर ने तैयार किया क्लोन...

अविशान बन गया 'शान'

ऊन व मांस की मांग को पूरा करने में है कारगर

पशु पालकों को मिलेगा लाभ

टोंक. देश में बढ़ रही मांस व ऊन की मांग को पूरा करने के लिए केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर के वैज्ञानिकों ने नई नस्ल तैयार की है। वैज्ञानिकों का दावा है कि ये नस्ल पशु पालकों के लिए वरदान साबित होगी। वैज्ञानिकों का कहना है कि संस्कृत में भेड़ को अवि कहते हैं। ऐसे में ये भेड़ की शान होने से इसका नाम 'अविशान' रखा गया है। अविशान जहां देश में दिनों-दिन बढ़ रही मांस की मांग को पूरा करने में कुछ हद तक कारगर होगी, वहीं ये पशु पालकों के लिए भी वरदान साबित होगी। इससे देखने व खासियत जानने के लिए इन दिनों पशुपालक संस्थान में आ रहे हैं।

यह है खास बात

वर्तमान में पशुपालक भेड़ से सालभर में एक बार में एक ही मेमना ले रहे हैं। जबकि अविशान भेड़ महज 8 महीने में ही 2 से 3 मेमने देगी। इसका शोध भी वैज्ञानिकों ने कर लिया है। इसमें पाया कि अविशान भेड़ आठ महीने में 2 से 3 मेमनों को जन्म देती है। इससे किसान आर्थिक रूप से विकसित होगा। कम समय में उसे अधिक लाभ मिलेगा। खास बात ये भी कि अविशान का वजन भी सामान्य भेड़ से अधिक है।

40 मेमने ज्यादा होंगे

रेवड़ में मादाओं की जन्म दर 85 प्रतिशत तथा मेमने की मृत्यु दर 5 प्रतिशत हो तो पशुपालक इस नस्ल से सामान्य भेड़ों की तुलना में 40 मेमने ज्यादा प्राप्त कर सकते हैं।

टोंक जिले के मालपुरा स्थित केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर में खड़ी अविशान भेड़ें।

तीसरी बार में मिली सफलता

पहली बार तैयार किए गए क्लोन से उत्पन्न नस्ल के कम दूध देने व मृत्यु दर अधिक होने पर एकबारगी तो संस्थान के वैज्ञानिक चिंतित हो गए, लेकिन उन्होंने हौसला नहीं छोड़ा और फिर से अनुसंधान में जुट गए। उन्होंने गैरोल तथा मालपुरा की भेड़ से उत्पन्न हुई नस्ल को फिर से मालपुरा की भेड़ से क्रॉस कराया। इसमें अधिक सफलता नहीं मिलने पर उन्होंने गुजरात की प्रसिद्ध पाटनवाड़ी नस्ल मंगवाई और उत्पन्न की गई नस्ल से क्रॉस कराया। इसमें चौंकाने वाले तथ्य सामने आए। उन्हें पता चला कि तैयार तीसरी नस्ल वजन में भारी है। उसमें दूध व अधिक बच्चे उत्पन्न करने की क्षमता है। इसके साथ ही इसकी मृत्यु दर भी काफी कम है। इसके बाद उन्होंने इस नस्ल से और क्लोन तैयार करना शुरू कर दिया। साथ ही क्षेत्र के पशुपालकों को ये नस्ल देकर प्रयोग किया जा रहा है। कुछ क्लोन यानी अविशान को अन्य प्रदेशों में भेजा गया है। इससे इसकी आबादी बढ़ जाएगी।

गैरोल से की शुरुआत

पश्चिमी बंगाल के सुंदर वन में पाई जाने वाली गैरोल नस्ल की भेड़ से इस अविशान नस्ल को तैयार किया गया। गैरोल का वजन तथा ऊंचाई काफी कम होती है। धीरे-धीरे ये विलुप्त भी होती जा रही है। ऐसे में संस्थान ने एक मादा भेड़ को पश्चिमी बंगाल से मंगवाया था, लेकिन ये क्लोन सफल नहीं हुआ।

पशु पालक होंगे लाभान्वित

अविशान से पशुपालक लाभान्वित होंगे। इससे अधिक मांस लिया जा सकता है। वहीं मेमने अधिक होने पर पशुपालक की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

डॉ. एस. एम. के. नकवी, संस्थान निदेशक, केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर।

6/1/2017